राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

देशस्य कर्णधाराणां, निर्मातारो हि शिक्षकाः ।
तान् असन्तोष्य देशस्य, कल्याणं नैव सम्भवम् ॥२१९॥

शिक्षक ही देश के कर्णधारों के निर्माता होते हैं । उनको असन्तुष्ट न करके देश का कल्याण होना सम्भव नहीं है ।

The teachers are the makers of the country's helmsmen. It is not possible for the country to prosper by keeping them unsatisfied.

देशं या सुचिरादेक, – सूत्रे बध्नाति सुदृढम् ।
सर्वपोषण – कर्त्री सा, भारती दूष्यते कथन् ॥२२०॥

जो चिरकाल से देश को एकता के सूत्र में दृढता से बाँध कर रख रही है, वह सभी का पोषण करने वाली भारतीय भाषा संस्कृत कैसे दोषी बतायी जा रही है ?

How can the all nurturing Indian language Sanskrit be called the culprit, which has always connected the country in unity?

देशः किं सुद्यृतो न स्यात्, स्त्रियः सम्भलिता यदि ।
स्नेहपाशेन बध्वा ताः, किं कर्त्तुं शक्नुवन्ति न ॥२२१॥

क्या देश सुधर नहीं जाय ? यदि स्त्रियाँ संभल जायें, अपने स्नेह के पाश से बाँध कर वे क्या नहीं कर सकतीं ।

Isn't it possible for the nation to be reformed? If the women come together, what can they not achieve with their snare/rope of love?

दोषः कस्मै प्रदीयेत, यदि दोषी स्वयं भवेत् ।

निजाक्ष्णोरङ्गुली–दानात्, किं कष्टं भविता नहिं ? ॥२२२॥

दोष किसको दिया जाय ? यदि व्यक्ति स्वयं ही दोषी हो । अपनी आँखों में अङ्गुलि देने से क्या कष्ट नहीं होगा ?

Who should be blamed if one himself is guilty? What would be the purpose of pointing a finger in ones eye?

दोषदानं प्रजायै तु, वृथैवास्तीति मन्यताम् ।

यतस्त्रिकालसत्यं यद्, यथा राजा तथा प्रजा ॥२२३॥

प्रजा को तो दोष देना व्यर्थ ही है, यह मान लीजिये क्योंकि यह त्रिकाल सत्य है कि जैसा राजा होता है वैसी उसकी प्रजा होती है ।

It is pointless to blame the people/public. Understand the eternal principle of how is the king, such are his subjects.

द्वावपीमौ न खेद्यौ स्तः, शिक्षकश्च चिकित्सकः ।

अनयोः खिन्नतायां कः, प्राप्नुयात् स्वसमीहितम् ॥२२४॥

शिक्षक और चिकित्सक इन दोनों को कभी खिन्न नहीं करना चाहिये । इनकी खिन्नता में कौन अपनी अभीष्ट प्राप्त कर सकता है ।

Teachers and doctors should never be unhappy/glum. Who can achieve desired things if they are unhappy?

द्यूतं मद्यं च सेवित्वा, गौरवं कस्य संस्थितम् ? ।

उन्नतिर्वा कृता केन् ?, सत्यं सत्यं निगद्यताम् ॥२२५॥

सच सच बताओ कि जुआ और मदिरा का सेवन करके किसका गौरव बन रहा है या किसने उन्नति की है ?

Do tell truthfully, who becomes more graceful and progresses by gambling and drinking?